

कालो चालोसा

दोहा

जय काली कलिमल हरण, महिमा अगम अपार।
महिष मर्दिनी कालिका, देहु अभय अपार॥

चौपाई 1

अरि मद मान मिटावन हारी।
मुण्डमाल गल सोहत प्यारी॥

चौपाई 2

अष्टभुजी सुखदायक माता।
दुष्टदलन जग में विख्याता॥

चौपाई 3

भाल विशाल मुकुट छवि छाजै।
कर में शीश शत्रु का साजै॥

चौपाई 4

दूजे हाथ लिए मधु प्याला।
हाथ तीसरे सोहत भाला॥

चौपाई 5

चौथे खप्पर खङ्ग कर पांचे।
छठे त्रिशूल शत्रु बल जांचे॥

चौपाई 6

सप्तम कर दमकत असि प्यारी।
शोभा अद्भुत मात तुम्हारी॥

चौपाई 7

अष्टम कर भक्तन वर दाता।
जग मनहरण रूप ये माता॥

चौपाई 8

भक्तन में अनुरक्त भवानी।
निशदिन रटें ऋषी मुनि ज्ञानी॥

चौपाई 9

महाशक्ति अति प्रबल पुनीता।
तू ही काली तू ही सीता॥

चौपाई 10

पतित तारिणी हे जग पालक।
कल्याणी पापी कुल घालक॥

चौपाई 11

शेष सुरेश न पावत पारा।
गौरी रूप धर्यो एक बारा॥

चौपाई 12

तुम समान दाता नहिं दूजा।
विधिवत करें भक्तजन पूजा॥

चौपाई 13

रूप भयंकर जब तुम धारा।
दुष्टदलन कीन्हेहु संहारा॥

चौपाई 14

नाम अनेकन मात तुम्हारे।
भक्तजनों के संकट टारे॥

चौपाई 15

कलि के कष्ट कलेशन हरनी।
भव भय मोचन मंगल करनी॥

चौपाई 16

महिमा अगम वेद यश गावैं।
नारद शारद पार न पावैं॥

चौपाई 17

भू पर भार बढ्यौ जब भारी।
तब तब तुम प्रकटीं महतारी॥

चौपाई 18

आदि अनादि अभय वरदाता।
विश्वविदित भव संकट त्राता॥

चौपाई 19

कुसमय नाम तुम्हारौ लीन्हा।
उसको सदा अभय वर दीन्हा॥

चौपाई 20

ध्यान धरें श्रुति शेष सुरेशा।
काल रूप लखि तुम्हरो भेषा॥

चौपाई 21

कलुआ भैरों संग तुम्हारे।
अरि हित रूप भयानक धारे॥

चौपाई 22

सेवक लांगुर रहत अगारी।
चौंसठ जोगन आज्ञाकारी॥

चौपाई 23

त्रेता में रघुवर हित आई।
दशकंधर की सैन नसाई॥

चौपाई 24

खेला रण का खेल निराला।
भरा मांस-मज्जा से प्याला॥

चौपाई 25

रौद्र रूप लखि दानव भागे।
कियौ गवन भवन निज त्यागे॥

चौपाई 26

तब ऐसौ तामस चढ़ आयो।
स्वजन विजन को भेद भुलायो॥

चौपाई 27

ये बालक लखि शंकर आए।
राह रोक चरनन में धाए॥

चौपाई 28

तब मुख जीभ निकर जो आई।
यही रूप प्रचलित है माई॥

चौपाई 29

बाढ्यो महिषासुर मद भारी।
पीड़ित किए सकल नर-नारी॥

चौपाई 30

करुण पुकार सुनी भक्तन की।
पीर मिटावन हित जन-जन की॥

चौपाई 31

तब प्रगटी निज सैन समेता।
नाम पड़ा माँ महिष-विजेता॥

चौपाई 32

शुंभ-निशुंभ हने छन माहीं।
तुम सम जग दूसर कोउ नाहीं॥

चौपाई 33

मान-मथनहारी खल दल के।
सदा सहायक भक्त विकल के॥

चौपाई 34

दीन विहीन करैं नित सेवा।
पावैं मनवांछित फल-मेवा॥

चौपाई 35

संकट में जो सुमिरन करहीं।
उनके कष्ट मातु तुम हरहीं॥

चौपाई 36

प्रेम सहित जो कीरति गावैं।
भव बन्धन सों मुक्ति पावैं॥

चौपाई 37

काली चालीसा जो पढ़हीं।
स्वर्गलोक बिनु बन्धन चढ़हीं॥

चौपाई 38

दया-दृष्टि हेरौ जगदम्बा।
केहि कारण माँ कियौ विलम्बा॥

चौपाई 39

करहु मातु भक्तन रखवाली।
जयति-जयति काली कंकाली॥

चौपाई 40

सेवक दीन अनाथ अनारी।
भक्तिभाव युत शरण तुम्हारी॥

समापन दोहा

प्रेम सहित जो करे, काली चालीसा पाठ।
तिनकी पूरन कामना, होय सकल जग ठाठ॥